पैन आई. आई. टी-2008-आई आई टी अलुमनी ग्लोबल कांफ्रेंस में प्रधानमंत्री का उद्‌घाटन भाषण

19 दिसम्बर 2008

छठे वार्षिक पैन आईआईटी ग्लोबल कांफ्रेंस के उद्‌घाटन सत्र में भाषण करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। किसी आईआईटी परिसर में आयोजित यह सम्मेलन अपने तरह का प्रथम सम्मेलन है और यह अत्यन्त उपयुक्त है कि इसका आयोजन आईआईटी चेन्नई में उसके स्वर्ण जयन्ती वर्ष में किया जा रहा है।

मुझे व्यक्तिगत रूप से आपके बीच उपस्थित होकर यह भाषण देना और भी अच्छा लगता, किन्तु, मुझे खेद है कि अनिवार्य व्यस्तताओं के कारण में ऐसा नहीं कर पाया। किन्तु, प्रौद्योगिकी की सहायता से मैं बड़ी आसानी से इतनी दूर बैठकर भी स्वयं को आपके साथ महसूस कर रहा हूं।

पिछले छह दशकों में आईआईटी प्रणाली ने 1,70,000 से अधिक स्नातक तैयार किए हैं। सामान्य तौर पर यह अनुमान है कि इनमें से करीब एक तिहाई या उससे अधिक स्नातकों को अन्य देशों में अवसर मिले हैं, जहां वे अपने-अपने विषय में विशेषज्ञ के रूप में दुनिया भर में अपनी पहचान कायम करने में सफल रहे हैं। उन्होंने विश्वभर में प्रौद्योगिकी संबंधी उपलब्धियों और पश्चिम में भारत की छवि बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। स्वदेश में रहने वाले अधिसंख्य आईआईटी स्नातकों ने भारत में अपने-अपने क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किए हैं। उनमें से अनेक प्रतिभाशाली अकादमीशियन, प्रखर अनुसंधान वैज्ञानिक, मौलिक चिन्तक, उद्यमशील उद्योगपति, प्रमुख नीति-निर्माता और समाज परिवर्तक एजेंट के रूप में सामने आए हैं।

मेरा विश्वास है कि ज्ञान-शक्ति बनना भारत की नियति है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के देश के प्रयासों में आईआईटी संस्थानों का शानदार योगदान रहा है। विश्व में और भारत में आईआईटी समुदाय की पहचान एक ऐसे समुदाय के रूप में बनी है जिसने ज्ञान अर्थव्यवस्था और ज्ञान आधारित समाज में महत्वपूर्ण योगदान किया है। आईआईटी प्रभाव अध्ययन के जो निष्कर्ष आज जारी किए जा रहे हैं उनसे इस मूल्यांकन की पुष्टि होती है। किन्तु, यह संभव है कि इस तरह का अध्ययन पहले से हासिल की गई उपलब्धियों के संदर्भ में आईआईटी स्नातकों व्यक्तिगत सफलताओं को उज़ागर करता हो, पर मेरा मानना है कि आज अधिक बड़ी चुनौती यह है कि विचारों और उपायों के सृजन के लिए इतना व्यापक और समृद्ध समुदाय उपलब्ध हो, जो "60 के भारत' की अद्भुत उपलब्धियों को "75 के भारत' की ठोस सफलताओं में परिणत कर सके।

आईआईटी प्रणाली की सफलता के कई कारण हैं। उनमें सबसे महत्वपूर्ण है उनकी स्वायत्तता, और मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि उत्कृष्टता के अन्य सभी संस्थानों की तरह आईआईटी संस्थानों को भी अधिक स्वायत्तता के साथ काम करने की आवश्यकता है।

एक अन्य, अधिक महत्वपूर्ण कारण, शायद यह है कि इन संस्थानों की प्रवेश प्रक्रिया कड़ी प्रतिस्पर्धा पर आधारित है जो यह सुनिश्चित करती है कि केवल सर्वोत्कृष्ट और सर्वोतम को ही दाखिला मिले।

आईआईटी संयुक्त प्रवेश परीक्षाओं से ऐसे पर्याप्त साक्ष्य मिलते हैं कि इन संस्थानों में अध्ययन का अवसर पाने वाले प्रत्येक विद्यार्थी के साथ कम-से-कम तीन से चार विद्यार्थी ऐसे होते हैं, जो समान रूप से प्रतिभाशाली होने के बावजूद सीटें सीमित होने के कारण अवसर से वंचित रह जाते हैं। यह अत्यन्त खेदजनक है क्योंकि इससे हजारों युवक और युवतियों को अवसर नहीं मिल पाते। अगर भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विश्व में अग्रणी रहना है और आर्थिक महाशक्ति बनना है, तो ऐसी प्रतिभाओं को व्यर्थ जाने से अवश्य बचाना होगा। ऐसे अनेक और संस्थानों की आवश्यकता है। इसे महसूस करते हुए हमारी सरकार ने क्षमता बढ़ाने के लिए ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान आठ नए आईआईटी संस्थान खोलने का फैसला किया है। मुझे इस बात पर गर्व है कि 2008-09 के चालू शैक्षिक वर्ष के दौरान हम 6 नए आईआईटी संस्थान खोलने में सफल रहे हैं हांलाकि ये संस्थान अस्थायी परिसरों में अथवा वर्तमान आईआईटी परिसरों में चलाए जा रहे हैं। मैं मौजूदा आईआईटी संस्थानों का आभारी हूं कि वे नए आईआईटी संस्थानों के संचालन और स्थापना में मदद कर रहे हैं।

हमने संस्थान निर्माण और शिक्षा में उत्कृष्टता का दूसरा चरण शुरू किया है। 8 नए आईआईटी संस्थानों के अलावा, हम 30 नए केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 7 नए आईआईएम संस्थान, 10 नए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, 20 नए आईआईआईटी संस्थान, 5 नए भारतीय विज्ञान शिक्षा संस्थान और 2 नए स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर खोलने की प्रक्रिया में हैं। इसके अलावा 1,000 नए पोलिटेक्निक संस्थान और ऐसे जिलों में 373 नए कॉलेज खोले जा रहे हैं, जहां कॉलेज शिक्षा के लिए दाखिले कम संख्या में हो रहे हैं।

मैं यह भलीभांति समझता हूं कि नए आईआईटी संस्थानों को पूरी क्षमता के साथ काम करने में समय लगेगा। ऐसे में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि पैन आईआईटी स्नातकों को नए आईआईटी संस्थानों की स्थापना और विकास में हर संभव सहायता करनी चाहिए, जो अभी प्रारंभिक अवस्था में है। प्रत्येक आईआईटी संस्थान अपने-अपने स्तर पर शैक्षिक उत्कृष्टता का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं कुल मिलाकर आईआईटी संस्थान प्रौद्योगिकी शिक्षा और अनुसंधान की एक प्रणाली के रूप में विश्व स्तरीय हैं। ज्यादातर वैश्विक सर्वेक्षणों में उनका रैंक निरंतर ऊंचा रहा है और वे विश्व में बेजोड़ सिद्ध हुए हैं।

इसके साथ ही हमें दो महत्वपूर्ण घटकों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

पहला यह है कि आईआईटी संस्थानों की शैक्षिक और अनुसंधान क्षमताओं को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। जैसा की मैंने पहले कहा कि इन संस्थानों के विद्यार्थी सर्वोत्कृष्ट और सर्वाधिक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में शामिल हैं। इसी प्रकार हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रशिक्षक भी विश्व स्तर के हों। विशेषकर, इन संस्थानों के विस्तार और उनके द्वारा किये जा रहे अनुसंधान को अधिक लाभकारी बनाने की आवश्यकता को देखते हुए प्रशिक्षकों का विश्व स्तरीय होना अनिवार्य है। अगर

हमारे मानक वैश्विक होने चाहिए तो हमारी पहुंच भी वैश्विक होनी चाहिए। हमें विश्व में किसी भी संस्थान से उत्कृष्ट होना चाहिए। इस संदर्भ में मैं विश्वभर के आईआईटी स्नातकों के योगदान का स्वागत करता हूं, जो वे अपने-अपने कॉलेजों को दे रहे हैं।

दूसरा घटक यह है कि आईआईटी संस्थानों से परे प्रौद्योगिकी संस्थानों का एक पूरा दायरा है, जिनकी संख्या कहीं अधिक है और वे प्रौद्योगिकी शक्ति के रूप में भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। 21वीं सदी के प्रथम दशक में हमने जो प्रौद्योगिकी क्रांति देखी है, उसमें इंजीनियरी कॉलेजों, एनआईटी संस्थानों और ऐसे ही अन्य संस्थानों का विशेष योगदान रहा है। उनके कार्य और योगदान को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। सरकार के रूप में हम यह सुनिश्चित करने के लिए वचनबद्ध हैं।

हमें इस आवश्यकता के प्रति भी सजग रहना है कि समाज के निर्धन और उपेक्षित वर्गों की पहुंच गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सुनिश्चित की जाए। हमारी सरकार ने समाज के उपेक्षित वर्गों के लिए अनेक स्कॉलरशिप योजनाएं शुरू की हैं। मुझे विश्वास है कि इन योजनाओं से कुल मिलाकर शैक्षिक अवसरों के विकास में मदद मिलेगी।

पैन आईआईटी आंदोलन अभी अपने विकास के प्रारंभिक चरण में है और मुझे पूरा भरोसा है कि आने वाले वर्षों में यह और सुदृढ़ होगा तथा इसे पोषित करने वाले समाज को इसका भरपूर लाभ पहुंचेगा। मैं आईआईटी समुदाय से अपील करता हूं कि वह व्यापक राष्ट्रीय और सामाजिक सरोकारों को समझते हुए अपनी पूर्ण क्षमता प्रदर्शित करे। उन्हें ऐसे संस्थानों और प्रक्रियाओं को प्रेरित करना होगा, जो हमारे समृद्ध ज्ञान समुदाय को व्यापक समाज की ऊर्जा और क्षमता के साथ जोड़ सके। मुझे उम्मीद है कि जिस तरह से आपने इस सम्मेलन में शामिल होने का उत्साह दिखाया है, उसे ध्यान में रखकर आप विशिष्ट उपलब्धियां हासिल करने वालों के विचारों को आत्मसात् करेंगे।

अगर हमें ज्ञान के क्षेत्र में महाशक्ति बनना है, तो देश में प्रत्येक क्षेत्र को ज्ञान, विशेषकर वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी संबंधी ज्ञान का विस्तार करना होगा। हम आईआईटी समुदाय से अपील करते हैं कि वह ज्ञान आधारित भारत के रूपांतरण की प्रक्रिया में भागीदार बने। मैं आप सभी को शुभकामनाएं देता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप व्यापक परिकल्पना करेंगे और उन्हें मूर्त रूप देने की शक्ति हासिल करेंगे। मैं इस सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

***